सैनिक अभियंता सेवा का कार्यकरण

2028. **श्री गया सिंह** : क्या रक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सैनिक अभियंता सेवा पिछले सौ वर्षों से जल आपूर्ति, विद्युत आपूर्ति, सड़कों तथा मकानों के निर्माण तथा रख-रखाव से संबंधित कार्य कर रही है; और

(ख) क्या सरकार ने इस विभाग के कार्यों को तीन अलग-अलग विभागों में बांट दिया गया और इससे व्यय में वृद्धि हो गई है; यदि हां, तो इस संबंध में ब्यौरा क्या है ?

रक्षा मंत्री (श्री शरद पवार) : (क) सैना इंजीनियरी सेवा की स्थापना 1923 में हुई थी, और यह तभी से जल एवं विद्युत आपूर्ति, सड़कों तथा भवनों का निर्माण और उनकी मरम्मत संबंधी रक्षा कार्यों को करती आ रही है ।

(ख) जी, नहीं ।

संसद-सदस्यों से प्राप्त पत्रों के उत्तर दिया जाना

2029. **श्री राम सिंह राठवा** : क्या रक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि उन्हें संसद-सदस्यों से पत्र/अभ्यावेदन/ज्ञापन प्राप्त हुए हैं; यदि हां, तो गत छः महीनों के दौरान उन्हें प्राप्त पत्रों/अभ्यावेदनों/ज्ञापनों की कुल संख्या कितनी है;

(ख) कितने पत्रों/अभ्यावेदनों/ज्ञापनों की उनके प्राप्त होने के पन्द्रह दिनों के भीतर पावती भेजी गई और कितने मामलों में अंतिम उत्तर अभी नहीं भेजा गया है;

(ग) उनके प्राप्त होने के पन्द्रह दिनों के भीतर पावती और तीन महीनों के भीतर अंतिम उत्तर न भेजने के क्या कारण हैं; और

(घ) पावती/अंतिम उत्तर भेजने में देरी, अंतिम उत्तर न दिए जाने के आधार पर और संसद-सदस्यों को गुमराह करने के आधार पर कितने अधिकारियों को दोषी पाया गया है और उनके विरुद्ध की गई कार्यवाही का ब्यौरा क्या है ?

5—417 RSS/93

रक्षा मंत्री (श्री शरद पवार) : (क) जी, हां । 1-6-1992 से 30-11-1992 तक संसद सदस्यों से प्राप्त ऐसे पत्रों की संख्या 1523 थी ।

(ख) इस प्रकार प्राप्त कुल 1523 पत्रों में से, 1510 की पावती 15 दिन के भीतर भेज दी गई थी । 396 पत्रों का अभी तक अंतिम उत्तर नहीं दिया गया है ।

(ग) रक्षा मंत्री जी को व्यक्तिगत रूप से दिए गए पत्रों की पावती दिए जाने की आवश्यकता नहीं होती । जिन मामलों में सुदूर स्थित फील्ड फार्मेशनों से सूचना एकत्र की जानी होती है उनके अंतिम उत्तर 3 माह से पहले नहीं दिए जा सकते क्योंकि उनसे संबंधित सूचना एकत्र करने में काफी समय लग जाता है ।

(घ) किसी भी अधिकारी ने पावती भेजने/अंतिम उत्तर देने में कोई अनौचित्य-पूर्ण विलंब नहीं किया है, न ही माननीय सांसदों को गुमराह किया है ।

मिसाइलों का उत्पादन

2030. **श्री राम गोपाल यादव** : क्या रक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) इस बात को ध्यान में रखते हुए कि पाकिस्तान परमाणु बम बना रहा है और पश्चिमी देशों से अत्याधुनिक अस्त्र-शस्त्र प्राप्त कर रहा है, क्या सरकार अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइलों और मध्यम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइलों का उत्पादन करने का विचार रखती है;

(ख) क्या "नाग", "त्रिशूल" और "पृथ्वी" जैसे सीमित मारक क्षमता वाली मिसाइलें शत्रुओं की मिसाइलों का सामना कर पाने में सक्षम हैं; और

(ग) यदि नहीं, तो इस संबंध में भारत ने क्या-क्या वैकल्पिक प्रबंध किए हैं ?

रक्षा मंत्री (श्री शरद पवार) : (क) फिल-हाल सरकार के विचाराधीन इस प्रकार का कोई प्रस्ताव नहीं है । तथापि, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन ने लम्बी दूरी की उड़ान मिशनों के लिए आवश्यक पुनः